नय

प्रस्तुतकर्ता –

प्रकाश और पूजा छाबडा,इन्दौर

परिभाषा

- जो वस्तु के एक अंश को ग्रहण करें
- जैसे रंग की अपेक्षा नींबू पीला हैं
- वैसे तो नींबू खट्टा भी है, गोल भी हैं, आदि

स्वरुप

- नय सम्यक् श्रुतज्ञान का अंश हैं (ज्ञानी इसे स्वीकारते हैं)
- कथन करने की शैली

नय किसमें लगते हैं?

- वाणी में
- ज्ञान में

नय किसमें नहीं लगते हैं?

- वस्तु में
- क्रिया में

नय के भेद

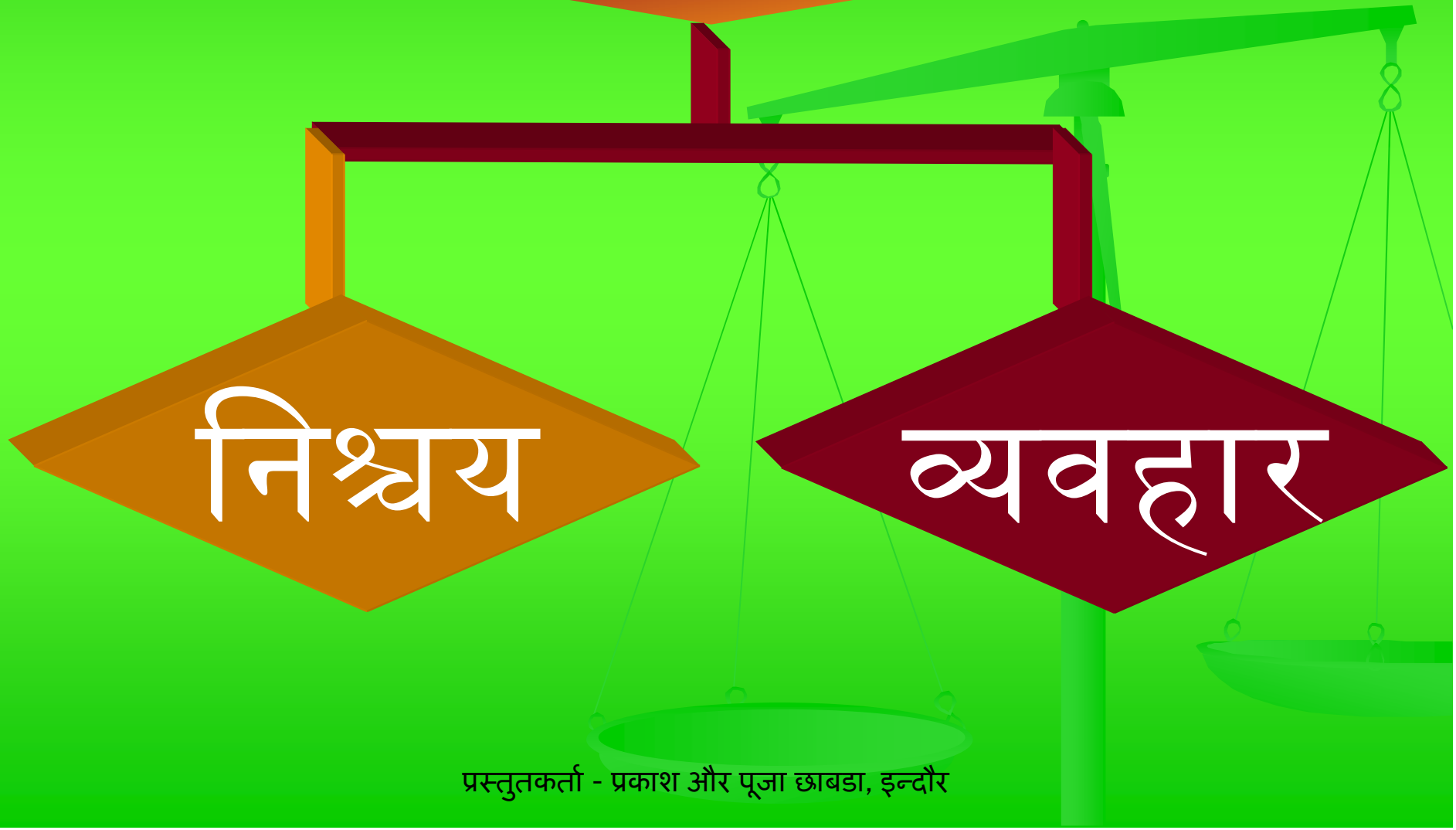

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

ये अध्यात्म के नय हैं

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

निश्चय नय किसे कहते हैं?

- जो वस्तु जैसी हैं उसे वैसा कहना / जानना
- जैसे – मिट्टी के घडे को मिट्टी का कहना / जानना

व्यवहार नय किसे कहते हैं?

- जो वस्तु जैसी नहीं हैं उसे निमित्तादि की वजह से वैसा कहना / जानना
- जैसे – मिट्टी के घडे को घी का संयोग देखकर घी का घडा कहना / जानना

निश्चय - व्यवहार

सत्यार्थ	असत्यार्थ
भूतार्थ	अभूतार्थ
सच्चा निरुपण	उपचरित निरुपण

व्यवहार नय

भेद - प्रभेद

व्यवहार नय के भेद

असद्भूत

भेद को अभेद बताना

सद्भूत

अभेद में भेद बताना

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

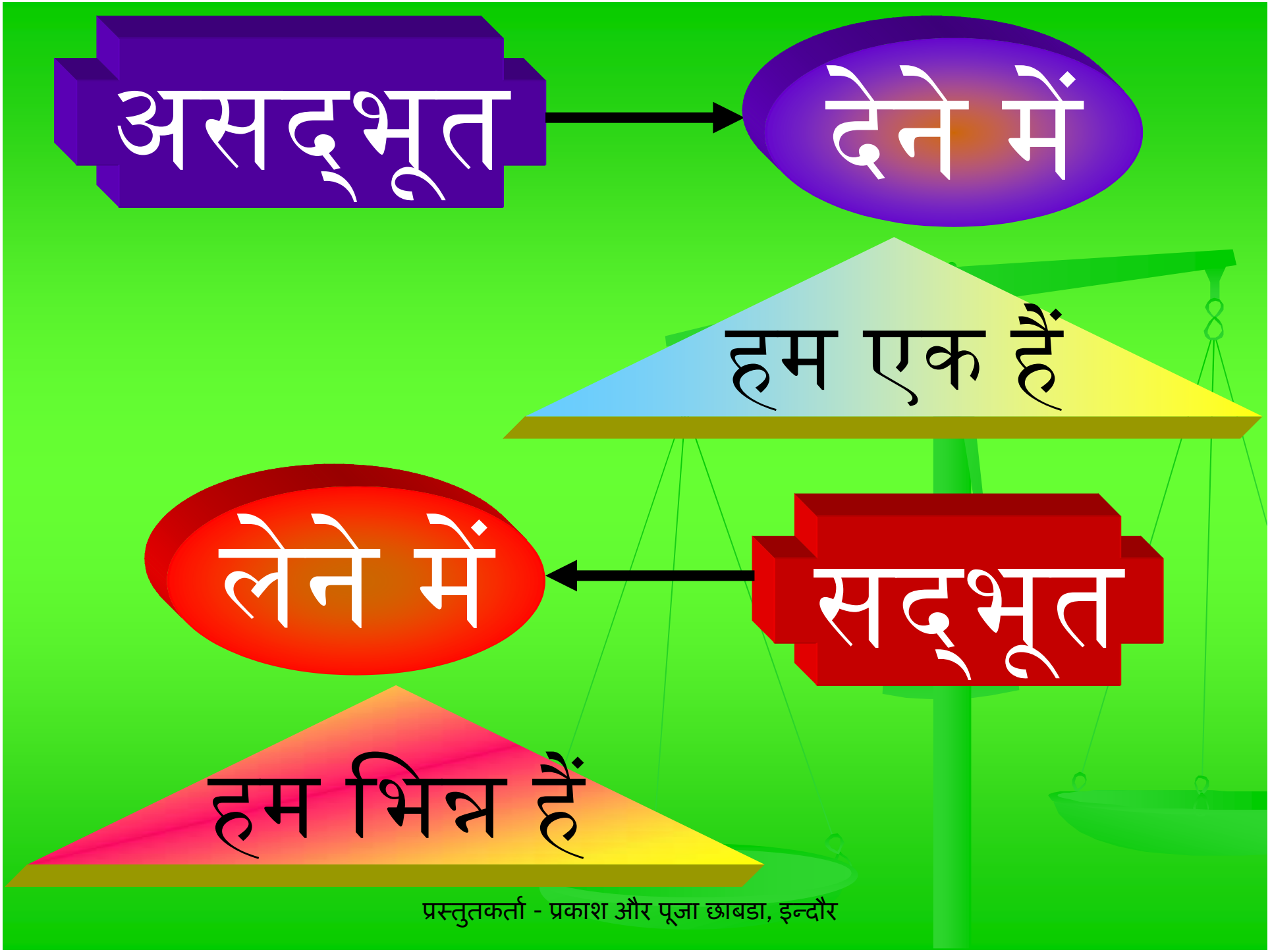
असद्भूत
देने में
हम एक हैं
लेने में
सद्भूत
हम भिन्न हैं

व्यवहार नय के भेद

असद्भूत

वस्तु के अस्तित्व में न हो

सद्भूत

वस्तु के अस्तित्व में हो

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

असद्भूत व्यवहार नय

भेद

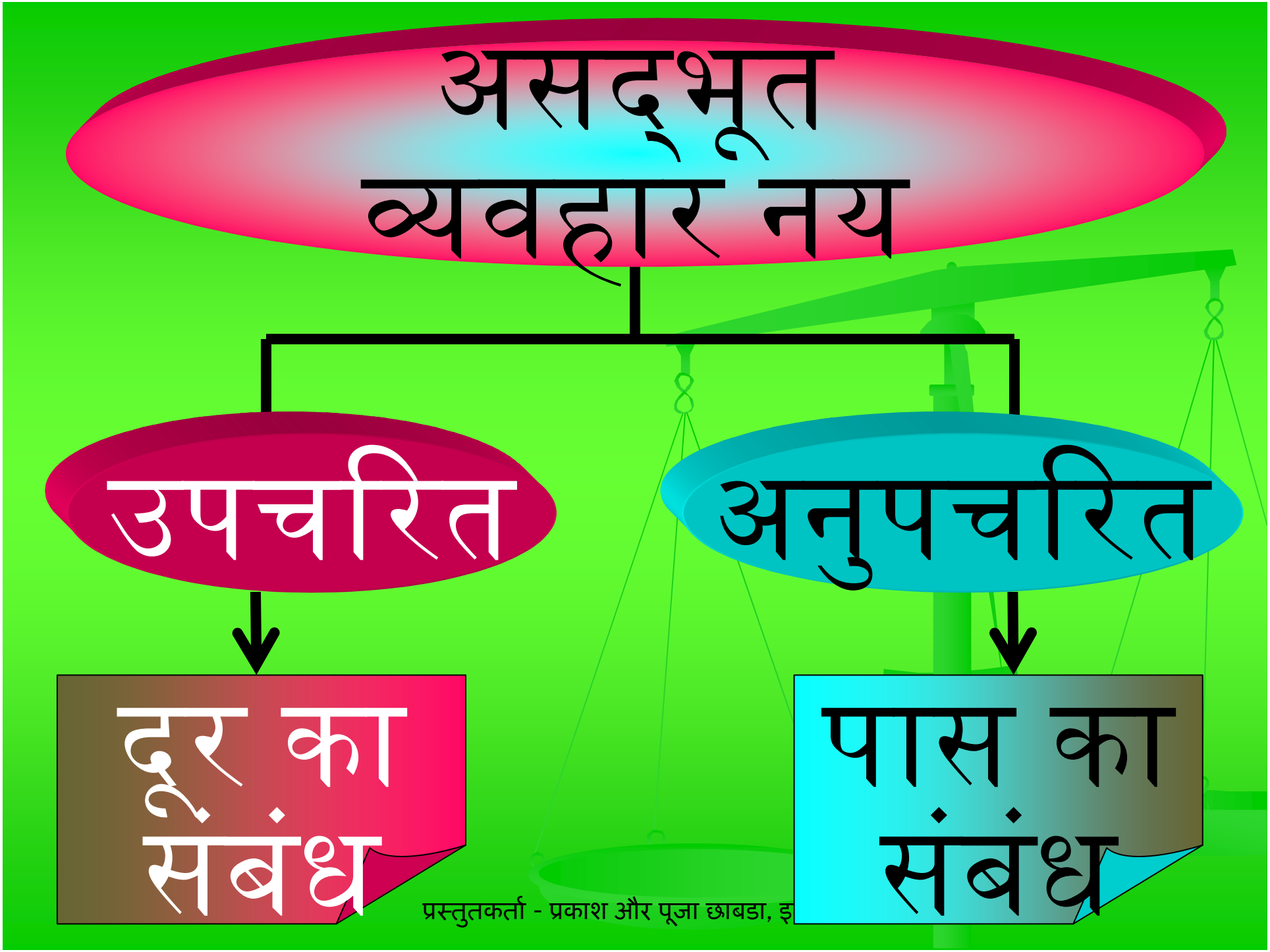

असद्भूत व्यवहार नय
उपचरित
अनुपचरित
दूर का संबंध
पास का संबंध
प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इ

उपचरित असद्भूत व्यवहार नय

- क्षेत्र से भिन्न पदार्थों को एक बताये
- जैसे - ये मेरा पुत्र हैं
  - ये मेरा मकान हैं

उपचरित क्यों?	दूर का संबंध - क्षेत्र से भिन्न
असद्भूत क्यों?	वस्तु के अस्तित्व में नहीं
व्यवहार क्यों?	ऐसा हैं नहीं पर ऐसा कहा जाता
नय क्यों?	ज्ञानी भी कहते

उपचरित क्यों?

दूर का संबंध

असद्भूत क्यों?

अपना है नहीं

व्यवहार क्यों?

कहा जाता

नय क्यों?

ज्ञानी भी कहते

अनुचरित असद्भूत व्यवहार नय

- एकक्षेत्र में रहने वाले भिन्न पदार्थो को एक बताये
- जैसे - ये मेरा शरीर हैं

अनुचरित क्यों?	पास का संबंध- एकक्षेत्रावगाही
असद्भूत क्यों?	वस्तु के अस्तित्व में नहीं
व्यवहार क्यों?	ऐसा हैं नहीं पर ऐसा कहा जाता
नय क्यों?	ज्ञानी भी कहते

अनुचरित क्यों?

पास का संबंध- एकक्षेत्रावगाही

असद्भूत क्यों?

हैं नहीं

व्यवहार क्यों?

कहा जाता

नय क्यों?

ज्ञानी भी कहते

सद्भूत व्यवहार नय

भेद

सद्भूत व्यवहार अखण्ड वस्तु में भेद बताता

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

सद्भूत व्यवहार नय

उपचरित

- विभाव भावों
- अविकसित पर्यायों

अनुपचरित

- विकसित पर्यायों
- गुण भेद

उपचरित सद्भूत व्यवहार नय

- अल्पविकसित पर्यायों के भेद कर उनहें जीव का कहना
- जैसे - मतिज्ञानादि जीव में हैं

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

उपचरित सद्भूत व्यवहार नय

- विभाव भावों को जीव का कहना
- जैसे - रागादि जीव में हैं

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

क्योंकि विभाव

उपचरित क्यों?

वस्तु के अस्तित्व में हैं

सद्भूत क्यों?

भेद हैं नहीं पर कहा जाता

व्यवहार क्यों?

ज्ञानी भी कहते

नय क्यों?

अनुचरित सद्भूत व्यवहार नय

- विकसित पर्यायों के भेद कर उनहें जीव का कहना
- जैसे - केवलज्ञानादि जीव में हैं

अनुचरित सद्भूत व्यवहार नय

- गुणों के भेद कहना
- जैसे - जीव में ज्ञान,दर्शन,सुख वीर्यादि हैं

क्योंकि स्वभाव

अनुचरित क्यों?

वस्तु के अस्तित्व में हैं

सद्भूत क्यों?

भेद हैं नहीं पर कहा जाता

व्यवहार क्यों?

ज्ञानी भी कहते

नय क्यों?

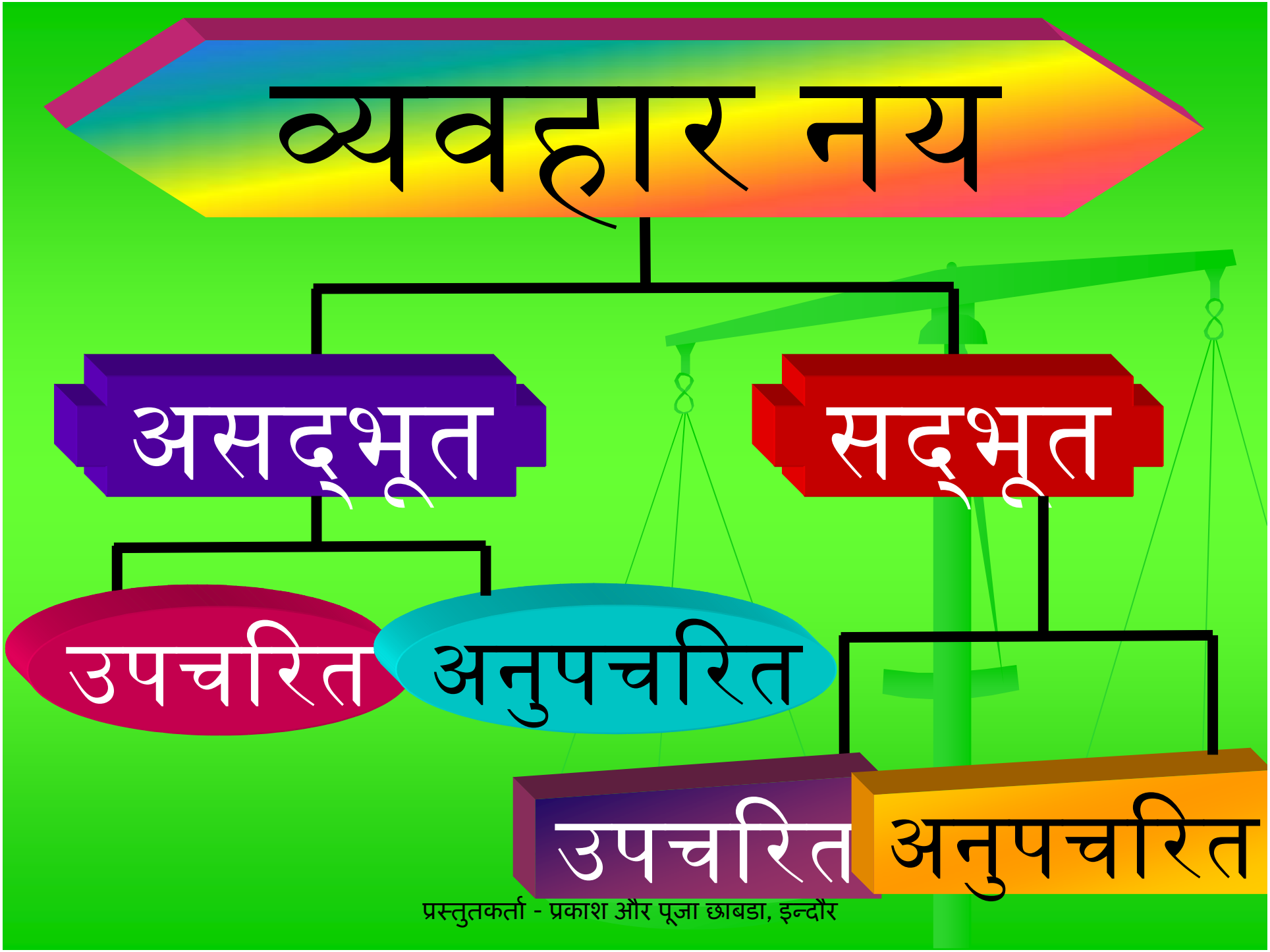

व्यवहार नय
असद्भूत
सद्भूत
उपचरित
अनुपचरित
उपचरित
अनुपचरित
प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

नय ज्ञान

उपयोगिता

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

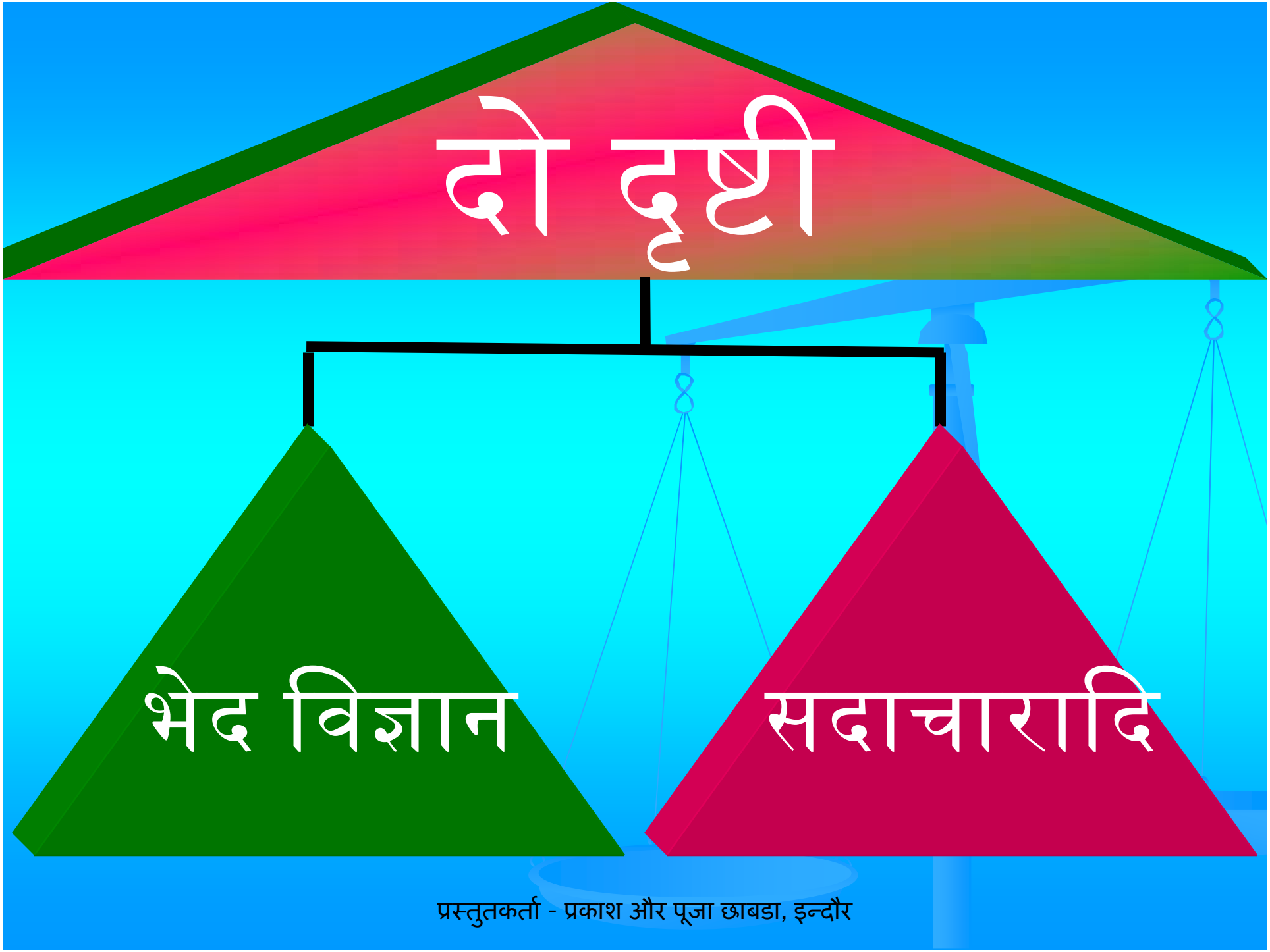
दो दृष्टी
भेद विज्ञान
सदाचारादि

प्रथम भेद विज्ञान दृष्टी

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

आत्मा की खोज के लिये प्रत्येक नय की उपयोगिता

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

उपचरित असद्भूत व्यवहार नय

उपयोगिता

- बताता आत्मा लोकाकाश में है
- अलोकाकाश में नही खोजना हैं

उपचरित असद्भूत व्यवहार नय

हेयता

- लोकाकाश बहुत बडा हैं
- विस्तार को कम करो

अनुचरित असद्भूत व्यवहार नय

उपयोगिता

- बताता आत्मा शरीर में है
- तीर्थों - मंदिरों में नही खोजना हैं
- “देह देवालय(मंदिर) हैं”

शरीर में आत्मा बताने का-

क्या ध्येय?

खोज शरीर के घेरे में लाना

क्या ध्येय नहीं?

मंदिर कहने से शरीर की सेवा कराने का नहीं

हेयता

अनुचरित असद्भूत व्यवहार नय

- आत्मा शरीर में है, पर शरीर आत्मा नहीं
- शरीर और आत्मा की व्यापति एक तरफा भी नहीं

जहाँ शरीर हो,
क्या वहाँ
आत्मा होगी ही

नहीं
मुर्दा शरीर

जहाँ आत्मा हो,
क्या वहाँ शरीर
होगा ही

नहीं
सिद्ध भगवान

❁बताता जो सुख-दुख का वेदन करें, जहाँ रागादि मिले वह आत्मा

उपचरित सद्भूत व्यवहार नय

उपयोगिता

☸रागादि की व्यापति आत्मा के साथ एक तरफा

हाँ

जहाँ रागादि हो, क्या वहाँ आत्मा होगी ही

नहीं अरहंत, सिद्ध भगवान

जहाँ आत्मा हो, क्या वहाँ रागादि होगें ही

- बताता जहाँ ज्ञान, दर्शन, सुख, वीर्यादि मिले वह आत्मा
- ज्ञानादि की व्यापति आत्मा के साथ दो तरफा है

जहाँ ज्ञानादि हो, क्या वहाँ आत्मा होगी ही

हाँ

जहाँ आत्मा हो, क्या वहाँ ज्ञानादि होगें ही

हाँ

- ज्ञानादि के भेद को ग्रहण करता
- आत्मा की प्राप्ति अखण्ड आत्मा के लक्ष्य से होगी

नय ज्ञान

उपयोगिता

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

द्वितीय सदाचारादि दृष्टी

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

उपचरित असद्भूत

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

उपचरित असद्भूत व्यवहार नय न मानने से नुकसान

- सदाचार का लोप
- अणुव्रत नहीं
- महाव्रत नहीं
- सम्यक्त्व की पात्रता की भूमिका नहीं रहेगी

चरणानुयोग का लोप

उपचरित असद्भूत व्यवहार नय न मानने से नुकसान

प्रथमानुयोग का लोप

- महापुरुषों के इतने पुत्रादि थे
- इतनी सम्पति थी
- आदि

उपचरित असद्भूत व्यवहार नय न मानने से नुकसान

करणानुयोग का लोप

- एक इन्द्र की इतनी इन्द्राणी होती हैं
- इतने विमान होते हैं
- इन्द्र के वैभव का दिग् दर्शन

उपचरित असद्भूत व्यवहार नय न मानने से नुकसान

अरहंत के मूलगुणों का लोप

- देवकृत अतिशय
- प्रातिहार्य

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

फिर झूठा क्यों?

- स्त्री, मकानादि कहने के अपने
- जीवन इनमें बर्बाद करने के लिये नहीं
- यहाँ वास्तविक सुख नहीं

अनुपचरित असद्भूत

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

- अहिंसामय आचरण का लोप
- चिंटी जीव हैं, उसे न मारो यही नय कहता

अनुपचरित असद्भूत व्यवहार नय न मानने से नुकसान

चरणानुयोग का लोप

पर दया के
बिना स्व दया
तीन काल में
नही हो सकती

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

करणानुयोग का लोप

- एकेन्द्रियादि जीव हैं
- मनुष्य,देव, नारकी जीव हैं
- इसी नय से

अनुपचरित असद्भूत व्यवहार नय न मानने से नुकसान

प्रथमानुयोग का लोप

- सतियों के सौंदर्य का वर्णन
- महापुरुषों के शरीरिक बल
- इसी नय से वर्णन

अनुपचरित असद्भूत व्यवहार नय न मानने से नुकसान

स्तुतियों का लोप

- तीर्थंकरों की शरीर के वर्ण की स्तुति
- दो गोरे, दो साँवले.....

अनुपचरित असद्भूत व्यवहार नय न मानने से नुकसान

मूलगुणों का लोप

- जन्म के दस अतिशय
- परमौदारिक देह

अनुपचरित असद्भूत व्यवहार नय न मानने से नुकसान

फिर झूठा क्यों?

- शरीर में आपनापन तो छोडना ही
- पूर्ण सुखी सिद्ध भगवान शरीर से रहित ही हैं

उपचरित सद्भूत

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

उपचरित सद्भूत व्यवहार नय न मानने से नुकसान

करणानुयोग का लोप

- जीव के रागादि भावों का ऐसा-ऐसा फल उसे मिलता हैं
- इसी नय का कथन

उपचरित सद्भूत व्यवहार नय न मानने से नुकसान

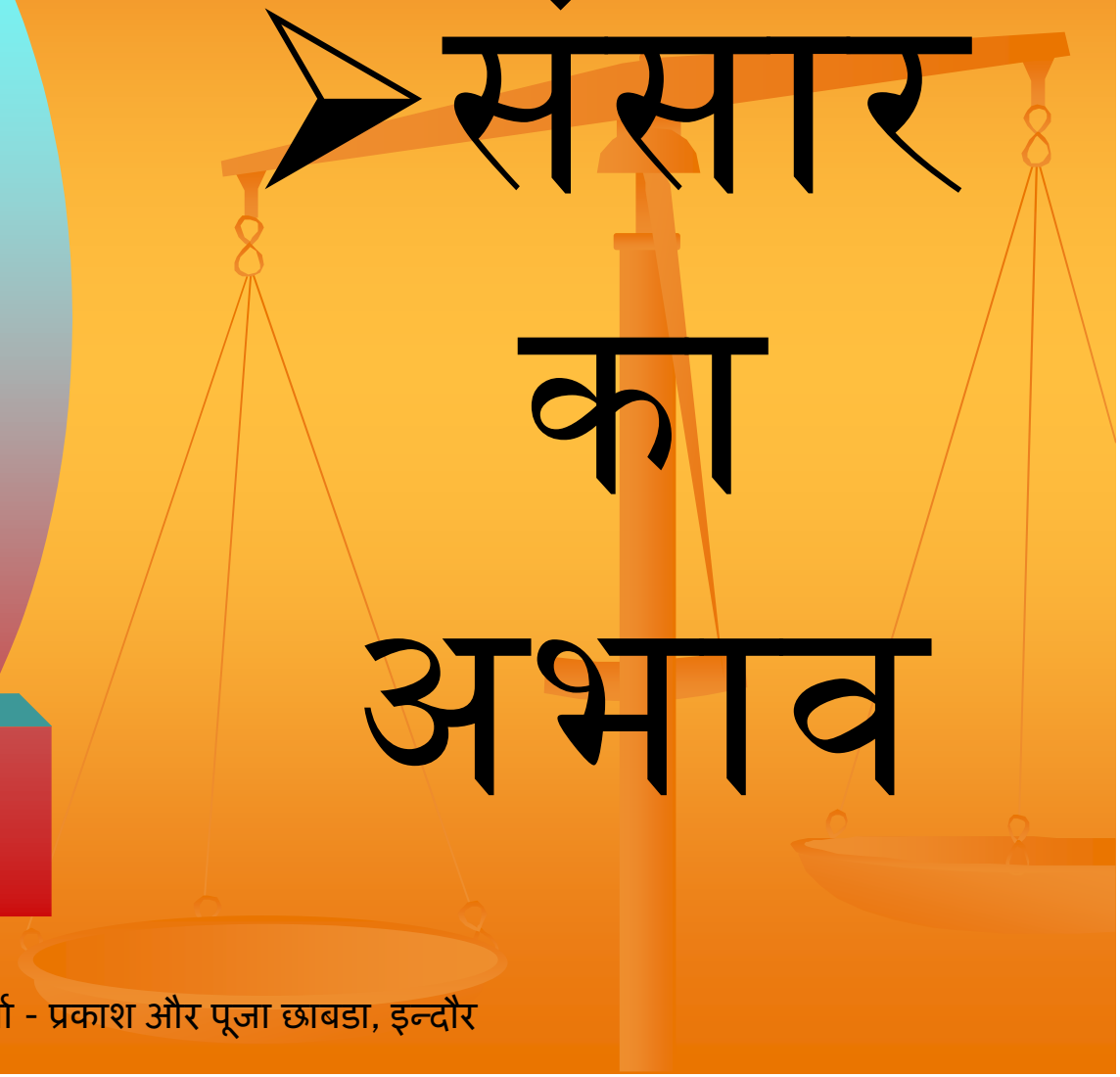

- संसार का अभाव

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

उपचरित सद्भूत व्यवहार नय स्वीकारना जरुरी

- राग है - ये स्वीकारना
- मैं राग का कर्ता हूँ, ये स्वीकारना

उपचरित सद्भूत व्यवहार नय स्वीकारना जरुरी

- अगर राग के कारण बँधा नहीं
- तो मुक्त किसे होना?
- संसार किसका?

फिर झूठा क्यों?

- राग पर्याय में हैं स्वभाव में नहीं

राग से छुटने का उपाय

राग मेरे मे नही हैं, ये स्वीकृति

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

उपचरित और अनुपचरित सद्भूत व्यवहार नय की सन्धि

- रागादि मेरे किये
- स्वीकारना जरूरी
- बिमार हूँ

- रागादि मेरे नहीं
- स्वीकारना जरूरी
- स्वभाव से स्वस्थ हूँ

अनुपचरित सद्भूत

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

अनुपचरित सद्भूत व्यवहार नय स्वीकारना जरुरी क्यों?

- आत्मा को जानना
- महिमा खोलकर देखने पर आऐगी
- अंदर के वैभव को भेदकर बतलाता

- आत्मा समझ आने पर, अनुभव के लिये समेटना जरुरी

➢मुनि दिक्षा

इस नय की स्वीकृति मतलब-

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

- देह मे आसक्ति का अभाव

इस नय की स्वीकृति मतलब-

दया अभाव बिना मोक्ष नहीं

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

नय

निश्चय नय

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

निश्चय नय-भेद

- अशुद्ध निश्चय नय
- शुद्ध निश्चय नय
  - एकदेश
  - शाक्षात
  - परम

अशुद्ध निश्चय नय

- अशुद्ध पर्याय के साथ अभेद बताये
- जैसे - जीव मिथ्यादृष्टी हैं

अशुद्ध पर्याय के साथ अभेद होने पर निश्चय कैसे?

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

निश्चय - व्यवहार परिभाषा

- भेद सो व्यवहार
- अभेद सो निश्चय

निश्चय और असद्भूत व्यवहार दोनों में अभेद का ग्रहण?

द्रव्य से पर्याय का अभेद निश्चय

दो द्रव्यों में अभेद व्यवहार

अशुद्ध निश्चय नय और उपचरित सद्भूत व्यवहार दोनों में रागादि का ग्रहण – अंतर क्या?

- पर्याय के साथ द्रव्य का अभेद

- अखण्ड में भेद

निश्चय

व्यवहार

एकदेश शुद्ध निश्चयनय

- आंशिक शुद्ध पर्याय के साथ अभेद बताये
- जैसे - जीव अविरत सम्यग्दृष्टी हैं

शाक्षात शुद्ध निश्चयनय

- पूर्ण शुद्ध पर्याय के साथ अभेद बताये
- जैसे – जीव केवलज्ञानी हैं

परम शुद्ध निश्चयनय

- शुद्धाशुद्ध पर्यायों से भिन्न एक अखण्ड द्रव्य

प्रत्येक की उपादेयता और हेयता

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

अशुद्ध निश्चय नय

उपादेयता

- अगर जीव अशुद्ध पर्याय से तन्मय नहीं होगा तो शुद्ध पर्याय से भी नहीं होगा
- अगर मिथ्यात्व ऊपर लोटेगा तो सम्यक्त्व भी ऊपर लोटेगा, सुख भी

अशुद्ध निश्चय नय

हेयता

- मिथ्यात्व पर्याय का अभाव होने पर ही सम्यक्त्व पर्याय की उत्पत्ति होगी

एकदेश शुद्ध निश्चय नय

उपादेयता

- ये वो पर्याय जो अनंत संसार का छेद करती

एकदेश शुद्ध निश्चय नय

हेयता

- ये अपूर्ण हैं
- ज्ञानी कभी अपूर्णता में संतुष्ट नहीं होते

- पूर्णता वाली पर्याय

उपादेयता

शाक्षात शुद्ध निश्चय नय

- पर्याय जो नई उत्पन्न हुई

हेयता

शाक्षात शुद्ध निश्चय नय

- ये तो वह जिसमें से पर्याय निकली
- ये तो वह जो अपने आप में परिपूर्ण
- ये तो वह जिसे सम्यग्दर्शन की जरुरत नहीं

परम शुद्ध निश्चय नय

उपादेयता

जिसके दर्शन का नाम सम्यग्दर्शन

जिसके ज्ञान का नाम सम्यग्ज्ञान

जिसमे लीनता का नाम सम्यचारित्र

परिपूर्ण तत्व

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

- कुछ नहीं
- अरे ये तो वह जो आश्रय करने योग्य उपादेय हैं

परम शुद्ध निश्चय नय

हेयता